

संसद ने अपनी सभी भारी संख्या के बावजूद पीएम गोदी के नेतृत्व वाला एनडीए गुट अभी भी दक्षिण में केवल टुकड़ों में मौजूद है। बीजेपी के पास दक्षिण भारत की 130 नें से केवल 29 सीटें हैं। इनमें से अधिकांश कर्नाटक से और कुछ तेलंगाना से आती हैं। हालांकि, जो बात बीजेपी को एक दुर्जय चुनावी संगठन

बनाती है, वह अपने राजनीतिक सक्रियता और माहौल बनाने के जरिए उन जगहों पर अपनी जमीन बनाने में निपुणता है, जहां उसके पास करने के लिए बहुत गुजांङ्श होती है। प्रधान मंत्री ने चुनावों से पहले प्रचार अभियान का नेतृत्व किया है। वर्ष की शुरुआत से, नोटी ने दो दर्जन से अधिक बार इस क्षेत्र का दौरा किया है। वो भी अक्सर बहुत धूमधान और प्रदर्शन के साथ। पीएम ने यहां विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया है। एनडीए उम्मीदवारों के लिए रोड शो और ऐलियां आयोजित कीं। इसके जवाब में विपक्षी दल द्रगुक, कांग्रेस, बीआरएस और वामपर्यायों ने चक्रव्यूह की तर्ज पर जोश के साथ अपना हमला तेज़ कर दिया।

નોંધ પત્ર



(आनल कुमार)

लाक्सम्बा चुनाव में दूसरे चरण का मतदान खत्म हो चुका है। बीजेपी के अबकी बार, 400 पार नारे के लिए दक्षिण का किला बहुत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। पाटी के साथ खुद पीएम मोदी ने दक्षिण भारत में बीजेपी की छाप छोड़ने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। देश में लोकसभा चुनाव शुरू हो चक्का है। 19 अप्रैल को पहले दौर

देश में लोकसभा चुनाव शुरू हो चुका है। 19 अप्रैल को पहली दिन और 26 अप्रैल दूसरे चरण का मतदान हो चुका है। लोकसभा चुनाव साथ देश में क्रिकेट का टूर्नामेंट आईपीएल भी चल रहा है। भारत प्रकृति परेंगा है जबकि

रहा है भारत एक ऐसा देश है जहा

मात्रा में राजनीतिक पूँजी निवेश की है। इस साल की शुरुआत में राम मंदिर अधिपति से लेकर मोदी ने आठ बार अकेले तमिलनाडु का दौरा किया। योगाणपत्र में 'सबसे पुणी भाषा' को दुनिया में पहुँचाने का बाद करने से लेकर, नई संसद में सेनगोल को शामिल करने तक, मंदिर के दौरे तक शामिल किया है। तमिल संगम शुरू करना, स्थानीय पोशाक पहनना, सार्वजनिक रैलियों में तिरुवक्टुवर जैसी स्थानीय सार्वजनिक हीस्टिंग्स को उद्घृत करना, यहां तक कि 'चुनावी तौर पर चुनिया समय' पर 'कच्चित् तीवृ' का मुद्दा उठाना, जैसा कि विष्फक्ष का दावा है, मोदी ने सब कुछ झोंक दिया है जनता की कल्पना पर कब्जा करने का उनका शास्त्रागार, जो अधिकांशतः भाजपा या प्रधान मंत्री के लिए अनुकूल नहीं रहा है।

द्रविड़ मातृभूमि के लिए लड़ाई

उत्तर भारत में बढ़ते मतदान आधार के बावजूद, बीजेपी ऐतिहासिक रूप से कभी भी तमिलनाडु में कोई महत्वपूर्ण पेट नहीं बना पाई है। फैक्ट यह है कि पार्टी का वोट शेयर 5 प्रतिशत से भी कम रहा है। यह राज्य पर क्षेत्रीय पार्टियों के नियंत्रण को बताता है। यह भगवा पार्टी के सही मायनों में अखिल भारतीय पार्टी बनने के मिशन के बीच एकमात्र बाधा बनी हुई है। हालांकि, बीजेपी यहां सीटें नहीं तो वोट शेयर में अपनी संभावनाएं बढ़ाने के लिए एक ठोस प्रयास करती नजर आ रही है। तमिलनाडु में बीजेपी के अधियान का नेतृत्व स्वयं प्रधान मंत्री और राज्य स्तर पर अनामलाइ के रूप में नए चेहरे ने किया है। एनआई के साथ हाल ही में एक इंटरव्यू में, पीएम मोदी ने कहा दावा किया कि द्रमुक के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर भाजपा की ओर अनुकूल बोटों में बदल रही है। प्रधान मंत्री ने बीजेपी के राज्य प्रमुख अनामलाइ को 'संतन विरोधी' और 'वंशवाद से प्रेरित द्रमुक' के खिलाफ लड़ने वाला 'सहृदय नेता' बताया था। तमिलनाडु बीजेपी प्रमुख अनामलाइ के जमीनी स्तर के प्रयासों और प्रतिरूपी द्रमुक को उनकी चुनौती ने ध्यान आकर्षित किया है। जनता के बीच उनकी लोकप्रियता और सत्तारूढ़ डीएमके पार्टी के साथ टकराव ने राज्य में भाजपा को सुखियों में ला दिया है। हालांकि सामान्य साझेदार अनाद्रमुक के साथ गठबंधन नहीं करते हुए, भाजपा ने क्षेत्र में छह से अधिक छोटे दलों के साथ गठबंधन किया है। हालांकि, मुख्यमंत्री स्टालिन, जो कि ईंडिया ब्लॉक के सबसे मजबूत क्षेत्रीय नेताओं में से एक है, ने दावा किया कि पीएम मोदी की दक्षिण यात्राएं उस नुकसान की भरपाई करने के लिए जो उत्तर में उनका इंतजार कर रहा है।

वर्षा करते भगवान् पाटा कि
लिए बहुत दूर हैं?

करल का राजनीति में लपट डमोक्राटिक फंट (एलडीएफ) और यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फंट (यूडीएफ) लवे से प्रभावी रहे हैं, लेकिन बीजेपी अब एक मजबूत चुनौती पेश करती है। चुनौती पेश करने के प्रयास में, बीजेपी ने तिरुवनंतपुरम में उत्तर के कांग्रेस सांसद शशि थरूर के खिलाफ केंद्रीय मंत्री राजीव गुर्जर और एटिंगल में यूडीएफ सांसद अद्वार प्रकाश के खिलाफ वीरतान को मैदान में उतारा है। कई हाई-प्राकाशल कांग्रेस नेता भी में शामिल हो गए हैं। इनमें पूर्व सोएम के करुणाकरण की बेटी वेणुगोपाल और पूर्व रक्षा मंत्री एके एंटनी के बेटे अनिल एंटनी हैं। चुनावों से पहले, प्रधान मंत्री इस वर्ष 7 बार केरल का दौरा करते हैं। राम मदिर के अभियंक के लिए आयातिक अय्यास शुरू करके, भाजपा के घोषणापत्र को केरल के लोगों के लिए 'विशु कहने तक, इसाई समुदाय तक पहुंचने तक, 'नारायण गुरु' धारानीय हस्तियों का आङ्गन करने तक शामिल है। अपनी बेटी के रडार पर आने के बाद सीएम पिनाई विजयन के नेतृत्व वाली हड्ड सरकार को 'भ्रष्ट' बताने से लेकर कांग्रेस पर केरल में वित पीएफआई की राजनीतिक शाखा से मदद लेने का आरोप के जरिये मोटी ने सभी पर दबाव डाला है।

इसने उन्हें सबसे कमजोर कहा और उम्मीदवारों को संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए विस्तारकों को तैनात किया। कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में 2017 के विधानसभा चुनावों के दौरान पैदल सैनिकों का पहली बार टेस्ट किया गया था। दक्षिण में अधिकांश बीजेपी उम्मीदवार भी मोटी की गारंटी के मुद्दे पर चल रहे हैं। यह प्रधानमंत्री के मजबूत नेतृत्व के बारे में अधिक है और खुद उम्मीदवारों वे बारे में कम दिखता हैं।
बीजेपी के लिए तमिलनाडु के लिए है चुनौती - मैडिया के साथ

नियमों तकीयता प्राप्त

संसद में अपनी सभी भारी संख्या के बावजूद पीएम मोदी के नेतृत्व वाला एनडीए गुट अभी भी दक्षिण में केवल टुकड़ों में पैरौद है। बीजेपी के पास दक्षिण भारत की 130 में से केवल 29 सीटें हैं। इनमें से अधिकांश कर्नाटक से और कछु तेलंगाना से आती हैं। शालिक, जो

जावेकरा फलाट्का से जारी मुख्य वर्तमानों से जारी हो गयाहै, जो

लाक्समा 2024 म 19 आर 26 अप्रल का दूसर चरण का मतदान हो गया ह। लाक्समा युनाव म अब एक-दूसर पर जमकर दाजनातक आराप-प्रत्याराप लगा रहा ह। दरअसल, कफर मुजाहिद इस बार बहुजन समाज पार्टी की टिकट पर बालाघाट संसदीय सीट से लोकसमा प्रत्याशी हैं जबकि उनकी पती कांग्रेस विधायक अनुगा मुजाहे कांग्रेस प्रत्याशी समाज सिंह सदस्यार के लिए वोट मांग रही हैं। हालांकि ऐसा पहले भी हुआ है कि एक ही परिवार के सदस्य गिर्जा प्रत्याशियों के पथ में युनाव प्रचार करें किंतु इन पति-पती का मामला अनोखा होता जा रहा है। सभी मात्र सत्तासुख के भूखे हैं और येन-केन-प्रकारेण स्वयं सत्ता सुख भोगना चाहते हैं, फिर भले ही पारिवारिक मूल्यों तथा इरतों की बलि ही क्यों न चढ़ जाए। कभी नेहरु गांधी परिवार में निजी इरतों में खटास की वजह से संज्ञा गांधी और याजीव गांधी के परिवार बोला गया था। आज अलगा होकर भी आपनी जीत सज्जिष्ठित करने का यह दृश्य बीचे तक पहुंच गया है।

म.प्र.बालाधाट से बारामती तक चुनावी चक्कर में बिखर रहे परिवार

म.प्र.बालाघाट से बारामती तक चुनावी चक्कर में बिखर रहे परिवार



ने उतारकर अपनी झोपड़ी पर लगा दिया है। 19 अप्रैल को प्रथम चरण के मतदान में बालाघाट स्टॉट पर मतदान पूर्ण हो गया है उसके बाद कंकर मुंजारे ने अपने घर वापस जाने की बात कही है किंतु जो राजनीतिक अलगाव दोनों में हो गया है, उससे क्या इनका आपसी सामंजस्य और वैवाहिक जीवन परी पर आ पाएगा, यह मध्य प्रदेश में चचों का विषय बन गया है। यही कम दिलचस्प नहीं है कि कंकर मुंजारे कांग्रेस से लोकसभा का टिकट मांग रहे थे जो उन्हें नहीं मिला और अनुभा मुंजारे जिन सप्टेंट सिंह का चुनाव प्रबाल कर रही हैं, उनके पिता अशोक सिंह मरस्वार से वे स्वयं दो बार

विधानसभा चुनाव हार चुकी हैं। पवार परिवार में बंटवारा शरद पवार के गढ़ बायमती लोकसभा में भी स्थिति ऐसी बन गई है जो आम जनता के साथ ही पवार परिवार को असहज कर रही है। अजीत पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार के सामने एनसीपी संस्थापक शरद पवार की पुत्री सुप्रिया सुले खड़ी हैं जिससे पहले से छिन-भिन्न पवार परिवार में और कलह बढ़ गई है। ननद-भाभी के बीच की लडाई ने चाचा-भतीजा के आपसी मतभेद को मनभेद में बदल दिया है। मेरे लिए ताजुब की बात है, वो बैरिस्टर कैसे बने?, ओवैसी के 'फ़ीफ़ काटे रहो' बयान पर भाजपा कैंडिडेट माथवी लता शरद पवार किसी भी कीमत पर

सुप्रिया सुले को जिताना चाहते हैं जबकि अजीत पवार अपनी पत्नी के सहरे अपने चाचा को राजनीतिक रूप से समाप्त करना चाहते हैं। यह तभी संभव है, जब वे चाचा से बारामती छीन लें वर्योंक चाचा की राजनीतिक गर्भनाल बारामती है। एक बार बारामती से चाचा को दूर किया तो पूरी राजनीतिक विरासत पर अजीत पवार का कब्जा हो जाएगा। तब सुप्रिया सुले को भी उनकी सरपरस्ती में आना होगा और यही शरद पवार नहीं चाहते। इसलिए शरद पवार सुप्रिया की जीत में कोई कसर नहीं छोड़ रहे किंतु क्षेत्र में अजीत पवार का भी खासा समर्थक वर्ग है जो शरद पवार को चिंतित कर रहा है। राजनीतिक

तथा विचारक मतभिन्नता को राजनीतिक लाभ-हानि के आड़े नहीं आने देते थे किंतु अब राजनीतिक मतभिन्नत पारिवारिक रिश्तों पर भारी पड़ने लगी है। चूंकि वर्तमान में राजनीति सत्तासुख का प्रयाय बन गई है अतः रिश्तों के भी अधिक फर्क नहीं पड़ रहा। सभी मात्र सत्तासुख के भूखे हैं और येन-केन-प्रकारे स्वयं सत्ता सुख भोगना चाहते हैं, फिर भले ही पारिवारिक मूलयों तथा रिश्तों की बलि ही क्यों न चढ़ जाए। कभी नेहरु गांधी परिवार में निजी रिश्तों में खटास की बजह से संजय गांधी और राजीव गांधी के परिवार ने अपना रास्ता अलग कर लिया था। आज अलग होकर भी अपनी जीत सुनिश्चित करने का यह नशा नीचे तक पहुंच चुका है।

